पाठ–16

नींव की ईंट हो तुम दीदी

–उदय प्रकाश

पाठ की संरचना

16.1 आइए शुरू करें
16.2 उद्देश्य
16.3 मूल-पाठ
16.4 आइए समझें
16.5 भाषा-शैली

16.1 आइए शुरू करें

किसी भी व्यक्ति के जीवन में उसके घर–परिवार की बहुत बड़ी भूमिका होती है। माता–पिता, भाई–बहन, दादा–दादी, और भी बहुत से लोग। कोई अपनी माँ के अधिक करीब होता है तो कोई अपने पिता के। हम यहाँ एक ऐसी कविता पढ़ेंगे जिसके केंद्र में न तो माँ है, न पिता। केवल एक भाई है, और उसकी बहन है। उदय प्रकाश की इस कविता में बचपन की स्मृतियाँ हैं, और हर एक स्मृति से बहन के जुड़ाव का मार्मिक चित्रण है। आइए, हम इस कविता को पढ़ते हैं और इसकी भावना से जुड़ने का प्रयास करते हैं।

16.2 उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- कविता की संवेदना का परिचय दे सकेंगे।
- कविता की व्याख्या कर सकेंगे।
- अपने अनुभवों के आधार पर कविता की अंतर्वस्तु पर टिप्पणी कर सकेंगे ।
- कविता में प्रयुक्त बिंबों की विशेषताएँ बता सकेंगे।

- कवि की भाषा पर टिप्पणी कर सकेंगे।
- कवि का संक्षिप्त परिचय दे सकेंगे।

16.3 मूल पाठ

पीपल होतीं तुम
पीपल, दीदी
पिछवाड़े का, तो
तुम्हारी खूब घनी-हरी टहनियों में
हारिल हम
बसेरा लेते।
हारिल होते हैं हमारी तरह ही
घोंसले नहीं बनाते कहीं
बसते नहीं कभी
दूर पहाड़ों से आते हैं
दूर जंगलों को उड़ जाते हैं।
पीपल की छाँह
तुम्हारी तरह ही
ठंडी होती है दोपहर।

ढिबरी थीं दीदी तुम
हमारे बचपन की
अचार का तलछट तेल
अपनी कपास की बाती में सोखकर
जलती रहीं।
हमने सीखे थे पहले-पहल अक्षर
और अनुभवों से भरे किस्से
तुम्हारी उजली साँस के स्पर्श में।
जलती रहीं तुम
तुम्हारा धुआँ सोखती रहीं
घर की गूँगी दीवारें

छप्पर के तिनके-तिनके
धुँधले होते गए

और तुम्हारी
थोड़ी सी कठिन रोशनी में
हम बड़े होते रहे।

नदी होतीं, तो
हम मछलियाँ होकर
किसी चमकदार लहर की
उछाह में छुपते
कभी-कभी बूँदें लेते
सीपी बन
किनारों पर चमकते।

चट्टान थीं दीदी तुम
सालों पुरानी।
तुम्हारे भीतर के ठोस पत्थर में
जहाँ कोई सोता नहीं निझरता,
हमीं पैदा करते थे हलचल
हमीं उड़ाते थे पतंग।

चट्टान थीं तुम और
तुम्हारी चढ़ती उम्र के ठोस सन्नाटे में
हमीं थे छोटे-छोटे पक्षी
उड़ते तुम्हारे भीतर

यहाँ झूले पड़े थे हमारी खातिर
गुड्डे रखे थे हमारी खातिर
मालदह पकता था हमारी खातिर
हमारी गेंदें वहाँ गुम हो गई थीं।

दीदी, अब
अपने दूसरे घर की
नींव की ईंट हुई तुम तो
तुम्हारी नई दुनिया में भी
होंगी कहीं हमारी खोई हुई गेंदें
होंगे कहीं हमारे पतंग और खिलौने

अब तो ढिबरी हुई तुम
नए आँगन की
कोई और बचपन
चीन्हता होगा पहले-पहल अक्षर
सुनता होगा किस्से
और यों
दुनिया को समझता होगा।

हमारा क्या है दिदिया री!
हारिल हैं हम तो
आएँगे बरस-दो बरस में कभी
दो-चार दिन
मेहमान-सा ठहरकर
फिर उड़ लेंगे कहीं और।

घोंसले नहीं बनाए हमने
बसे नहीं आज तक।

कठिन है
हमारा जीवन भी
तुम्हारी तरह ही।